Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

# ग्रामीण भारतीय परिवारों में लिंग भूमिकाओं पर प्रवास का प्रभाव

**डॉ. योगेन्द्र जैन***

* अतिथि विद्वान (समाजशास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, शामगढ़ (म.प्र.) भारत

**शोध सारांश –** भारत में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में पुरुषों का प्रवास एक बढ़ती हुई सामाजिक–आर्थिक घटना है। यह शोध पत्र ऐसे प्रवास के लैंगिक परिणामों की जांच करता है, विशेष रूप से यह कैसे ग्रामीण घरों में पीछे रह गई महिलाओं की भूमिका, जिम्मेदारियों और शक्ति गतिशीलता को नया रूप देता है। यह पुरुषों की अनुपस्थिति में बढ़ी हुई स्वायत्तता और बोझ, और पारंपरिक लैंगिक मानदंडों की बातचीत के विरोधाभास की पड़ताल करता है।

ग्रामीण भारतीय परिवारों के लिए आर्थिक कठिनाई से निपटने के लिए प्रवास लंबे समय से एक रणनीति रही है, जिसमें पुरुष अक्सर रोजगार के लिए शहरों या अन्य क्षेत्रों में चले जाते हैं। हालाँकि, प्रवास के आर्थिक आयामों का व्यापक रूप से अध्ययन किया गया है, लेकिन भेजने वाले परिवारों की सामाजिक संरचना पर इसके प्रभाव विशेष रूप से लिंग भूमिकाओं के संदर्भ में तुलनात्मक रूप से कम ध्यान दिया गया है। यह अध्ययन पुरुष प्रवास के परिणाम स्वरूप ग्रामीण परिवारों के भीतर बदलती गतिशीलता पर ध्यान केंद्रित करके उस अंतर को पाटने का प्रयास करता है।

**शब्द कुंजी –** लिंग, भूमिकाए, प्रवास, लैंगिक गतिशीलता।

**प्रस्तावना –** हाल के दशकों में, भारत में आंतरिक प्रवास एक महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक घटना के रूप में उभरा है, जो विशेष रूप से ग्रामीण परिवारों को प्रभावित कर रहा है। एक उल्लेखनीय प्रवृत्ति रोजगार के अवसरों की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी केंद्रों की ओर पुरुषों का पलायन है। इस बदलाव का ग्रामीण परिवारों के भीतर लैंगिक गतिशीलता पर गहरा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि महिलाएं अक्सर पारंपरिक रूप से पुरुषों द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाएं निभाती हैं।

शोध से पता चलता है कि पुरुषों के पलायन से घरेलू क्षेत्रों और कृषि गतिविधियों दोनों में महिलाओं की जिम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं। उदाहरण के लिए, पूर्वी उत्तर प्रदेश के चावल उत्पादक गाँवों में, महिलाओं ने पुरुष श्रम की अनुपस्थिति की भरपाई के लिए कृषि कार्यों की एक विस्तृत श्रृंखला को अपने हाथ में ले लिया है। यह परिवर्तन न केवल उनके कार्यभार को बढ़ाता है बल्कि पारंपरिक लिंग मानदंडों को भी चुनौती देता है, जिससे संभावित रूप से महिलाओं के लिए अधिक स्वायत्तता और निर्णय लेने की शक्ति प्राप्त होती है।[1]

हालांकि, महिला सशक्तिकरण पर पुरुष प्रवास का प्रभाव सूक्ष्म है। जबकि कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि महिलाओं को घरेलू निर्णयों और वित्त पर अधिक नियंत्रण मिलता है, अन्य पितृसत्तात्मक संरचनाओं की दृढ़ता को उजागर करते हैं जो वास्तविक सशक्तिकरण को सीमित करते हैं। उदाहरण के लिए, ग्रामीण पंजाब में, प्रवासी पतियों द्वारा पीछे छोड़ी गई महिलाओं को अक्सर पहचान के संकट का सामना करना पड़ता है, जो नई जिम्मेदारियों को सामाजिक अपेक्षाओं के साथ संतुलित करती हैं।[2]

इसके अलावा, इन महिलाओं के लिए स्वास्थ्य संबंधी निहितार्थ महत्वपूर्ण हैं। अकेले घर और खेतों को संभालने से जुड़ी अतिरिक्त जिम्मेदारियाँ और तनाव उनके स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। इन चुनौतियों के बावजूद, कुछ महिलाओं ने स्थानीय शासन संरचनाओं के साथ राजनीतिक जुड़ाव और बातचीत में वृद्धि की रिपोर्ट की है, जो प्रवास, लिंग भूमिकाओं और सशक्तिकरण के बीच एक जटिल अंतर्संबंध का सुझाव देता है।[3]

**शोध पत्र का उद्देश्य :**

1. यह जांच करना कि पुरुष प्रवासन ग्रामीण परिवारों में श्रम और जिम्मेदारियों के विभाजन को किस प्रकार प्रभावित करता है।
2. प्रवासी परिवारों में महिलाओं की निर्णय लेने की शक्ति, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक भूमिकाओं में बदलाव का विश्लेषण करना।

**शोध पद्धति –** प्रस्तुत शोध पत्र गुणात्मक अध्ययन पर आधारित है जिसमें द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध में पत्र पत्रिकाएं, समाचार पत्रों का आकलन, पुस्तक, शोध पत्रों का विश्लेषण किया गया है।

**शोध चर्चा –** ग्रामीण क्षेत्रों से पुरुषों का पलायन अक्सर शहरी केंद्रों या विदेश में रोजगार के लिए घरेलू गतिशीलता को महत्वपूर्ण रूप से बदल देता है। पुरुषों की अनुपस्थिति में, महिलाएं आमतौर पर घरेलू प्रबंधन और कृषि कार्य दोनों में अधिक जिम्मेदारियां संभालती हैं। इससे कृषि में महिलाओं का दबदबा बढ़ता है और परिवार के भीतर निर्णय लेने की भूमिका में बदलाव होता है। कुछ मामलों में महिलाओं को अधिक स्वायत्तता मिल सकती है, लेकिन उन्हें काम का बोझ भी बढ़ जाता है और लगातार सामाजिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

जब पुरुष सदस्य पलायन करते हैं, तो घर और समुदाय में उनकी भूमिकाएँ अक्सर खाली रह जाती हैं, जिससे जिम्मेदारियों का काफी हद तक नया स्वरूप सामने आता है। महिलाओं को, विशेष रूप से, दोहरे बोझ का सामना करना पड़ता है, उन्हें घर में अपनी पारंपरिक भूमिकाएँ निभानी होती

हैं, साथ ही उन जिम्मेदारियों को भी उठाना होता है जो पहले पुरुषों द्वारा संभाली जाती थीं। इसमें कृषि कार्य, वित्तीय प्रबंधन और समुदाय-स्तर पर निर्णय लेना शामिल है। भूमिकाओं में बदलाव से एक ऐसी घटना होती है जिसे कृषि का नारीकरण कहा जाता है, जहाँ महिलाएँ प्राथमिक कृषि श्रम शक्ति बन जाती हैं, भले ही उनके पास अक्सर भूमि का स्वामित्व या ऋण और विस्तार सेवाओं तक पहुँच की कमी होती है।

1. महिलाओं के लिए कार्यभार में वृद्धि महिलाएं पारंपरिक रूप से पुरुषों द्वारा प्रबंधित कार्यों को संभालती हैं, जैसे कि हल चलाना (जहां सांस्कृतिक रूप से अनुमति हो), वित्तीय निर्णय और सामुदायिक अंत:क्रियाएं।
2. कृषि का स्त्रीकरण भारत सहित दक्षिण एशिया के कई भागों में प्रवास के कारण महिलाएं प्राथमिक कृषि श्रमिक बन गई हैं।
3. लिंग भूमिकाओं में बदलाव महिलाओं का अस्थायी सशक्तिकरण हो सकता है, लेकिन संरचनात्मक असमानताएं अक्सर बनी रहती हैं।
4. बच्चों और बड़ों की जिम्मेदारियां महिलाएं और कभी-कभी बड़े बच्चे देखभाल और कृषि कार्य की अधिक जिम्मेदारी लेते हैं।

कई विकासशील देशों में, खास तौर पर दक्षिण एशिया में, ग्रामीण इलाकों से शहरी इलाकों या विदेशों में पुरुषों का प्रवास एक व्यापक आजीविका रणनीति के रूप में उभरा है। जबकि प्रवास को मुख्य रूप से आर्थिक दृष्टिकोण से देखा जाता है - प्रेषण और रोजगार पर केंद्रित - यह प्रवासी परिवारों के भीतर महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक बदलावों की ओर भी ले जाता है। सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तनों में से एक उन महिलाओं की भूमिका और स्थिति में होता है जो पीछे रह जाती हैं।जब पुरुष प्रवास करते हैं, तो महिलाएं अक्सर घर के प्रबंधन, बच्चों के पालन-पोषण और कृषि कार्य से संबंधित दिन-प्रतिदिन की जिम्मेदारियाँ संभालती हैं। यह बदलाव स्वाभाविक रूप से उनके निर्णय लेने की शक्ति को बढ़ाता है, खासकर बजट, बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा जैसे नियमित मामलों में। कुछ मामलों में, महिलाएँ कृषि नियोजन, श्रम भर्ती और यहाँ तक कि स्थानीय शासन निकायों से निपटने में भी शामिल होती हैं। यह बढ़ी हुई जिम्मेदारी अक्सर महिलाओं में अधिक आत्मविश्वास और स्वतंत्रता की भावना को बढ़ावा देती है।इसके अलावा, पुरुषों की अनुपस्थिति कभी-कभी महिला सशक्तिकरण के लिए उत्प्रेरक का काम कर सकती है। महिलाएँ स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी), सूक्ष्म-वित्त गतिविधियों और पंचायती राज संस्थाओं (पीआरआई) जैसी स्थानीय राजनीतिक प्रक्रियाओं में भाग लेना शुरू कर देती हैं। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) जैसी सरकारी योजनाओं ने ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रशिक्षण, ऋण पहुँच और नेतृत्व विकास की पेशकश करके इस प्रवृत्ति का समर्थन किया है।

**निष्कर्ष -** पुरुष प्रवास का ग्रामीण परिवारों पर गहरा प्रभाव पड़ता है, खास तौर पर श्रम विभाजन और जिम्मेदारियों के मामले में। हालांकि यह महिलाओं की भागीदारी और स्वायत्तता के लिए जगह खोल सकता है, लेकिन यह अक्सर उनके बोझ को बढ़ाता है और प्रणालीगत लैंगिक असमानताओं को उजागर करता है। यह सुनिश्चित करने के लिए एक व्यापक, लिंग-संवेदनशील नीति ढांचा महत्वपूर्ण है कि प्रवास का बोझ ग्रामीण महिलाओं और परिवारों पर असमान रूप से न पड़े।

पुरुष प्रवास कभी-कभी लिंग मानदंडों में बदलाव ला सकता है। जिम्मेदारियों में वृद्धि के साथ, महिलाओं को आत्मविश्वास और स्वायत्तता मिल सकती है। कुछ मामलों में, वे स्वयं सहायता समूहों में भाग लेना, वित्ता का प्रबंधन करना और स्थानीय शासन संरचनाओं से जुड़ना शुरू कर देती हैं। भारत के राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन जैसे कार्यक्रमों ने महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाने के लिए इस बदलाव का लाभ उठाया है। हालाँकि, वास्तविक सशक्तिकरण भूमि अधिकार, पितृसत्तात्मक सामाजिक मानदंडों और महिलाओं की भूमिकाओं की औपचारिक मान्यता की कमी जैसी संरचनात्मक बाधाओं से सीमित है।

प्रवासी परिवारों में महिलाओं की सामाजिक भूमिकाएँ भी स्पष्ट रूप से बदलती हैं। उन्हें घरेलू और सामुदायिक मामलों में नेतृत्व संभालते हुए देखा जाता है। समय के साथ, ये भूमिका परिवर्तन पारंपरिक लिंग मानदंडों को चुनौती दे सकते हैं। फिर भी, परिवर्तन हमेशा रैखिक या स्थायी नहीं होता है। जब पुरुष प्रवासी वापस लौटते हैं, तो अक्सर पितृसत्तात्मक नियंत्रण की फिर से पुष्टि होती है , जो महिलाओं को अस्थायी रूप से प्राप्त स्वायत्तता को कम कर सकती है।

ग्रामीण परिवारों में महिलाओं पर पुरुष प्रवास का जटिल प्रभाव पड़ता है। यह एजेंसी और सशक्तिकरण के लिए नए स्थान बनाता है, लेकिन ये लाभ अक्सर मौजूदा लिंग संरचनाओं द्वारा आकार और सीमित होते हैं। स्थायी सशक्तिकरण के लिए, लिंग-संवेदनशील नीतियों की आवश्यकता है जो न केवल प्रवासी श्रमिकों का समर्थन करती हैं बल्कि उनके पीछे छोड़ी गई महिलाओं की क्षमताओं और अधिकारों को भी मजबूत करती हैं।

**सुझाव -** इन चुनौतियों से निपटने के लिए, नीतिगत हस्तक्षेपों को न केवल प्रवासियों का बल्कि पीछे छूट गए लोगों का भी समर्थन करना चाहिए। महिलाओं के लिए भूमि अधिकार सुनिश्चित करने, ऋण तक पहुँच बढ़ाने, ग्रामीण रोजगार में सुधार करने और सामाजिक सुरक्षा जाल प्रदान करने वाले कार्यक्रम आवश्यक हैं। इसके अलावा, महिलाओं के काम की मान्यता - भुगतान और अवैतनिक दोनों को ग्रामीण विकास नीतियों में एकीकृत किया जाना चाहिए।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :-**

1. https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC8223494/
2. Kaur, A. P. (2020). Impact of Migration on Gender Roles: Study of Left Behind Wives in Rural Punjab. *Indian Journal of Health and Wellbeing*, 11(7-9), 407-411.
3. Lei, L., & Desai, S. (2021). Male out-migration and the health of left-behind wives in India: The roles of remittances, household responsibilities,and autonomy. Social Science & Medicine, 280, 11398 Soc Sci Med. 2021 Jul;280:113982.Doi: 10.1016/j.socscimed.2021.113982
4. Desai, S., & Banerji, M. (2008). "Negotiated Identities: Male Migration and Left-Behind Wives in India.https://www.popcouncil.org/uploads/pdfs/wp/india/011.pdf
5. FAO (2011). The Role of Women in Agriculture. https://www.fao.org/3/am307e/am307e00.pdf

**********